INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

After studying this chapter, the learners will

- **become familiar with the state of the Indian economy in 1947, the year of India's Independence**
- **understand the factors that led to the underdevelopment and stagnation of the Indian economy.**

इस अध्याय को पढ़न के बाद आप

- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय वर्ष 1947 में भारत की अर्थव्यवस्था की दशा के बारे में जानेंगे;
- भारतीय अर्थव्यवस्था को अल्प विकास तथा गत्यावरोध की स्थिति में पहुँचा देने वाले कारकों से परिचित होंगे।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

INTRODUCTION

The primary objective of this book, Indian Economic Development, is to familiarise you with the basic features of the Indian economy, and its development, as it is today, in the aftermath of Independence. However, it is equally important to know something about the country's economic past even as you learn about its present state and future prospects. So, let us first look at the state of India's economy prior to the country's independence and form an idea of the various considerations that shaped India's post-independence development strategy.

परिचय

'भारत का आर्थिक विकास' विषयक इस पुस्तक का मूल उद्देश्य आपको भारतीय अर्थव्यवस्था की मूलभूत विशेषताओं की जानकारी देना और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हुए विकास से अवगत कराना है। यद्यपि, देश की वर्तमान अवस्था तथा भविष्य की संभावनाओं की चर्चा करते समय उसके आर्थिक अतीत पर ध्यान देना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण होगा, इसलिए हम अपनी चर्चा का आरंभ स्वतंत्रता से पूर्व देश की अर्थव्यवस्था की स्थिति से कर रहे हैं। इसी क्रम में हम उन सब बातों की भी स्पष्ट पहचान करेंगे, जिन्होंने स्वतंत्र भारत के विकास की रणनीतियों का निर्धारण करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The sole purpose of the British colonial rule in India was to reduce the country to being a raw material supplier for Great Britain's own rapidly expanding modern industrial base.

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का मुख्य उद्देश्य इंग्लैंड में तेज़ी से विकसित हो रहे औद्योगिक आधार के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था को केवल एक कच्चा माल प्रदायक तक ही सीमित रखना था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

LOW LEVEL OF ECONOMIC DEVELOPMENT UNDER THE COLONIAL RULE

India had an independent economy before the advent of the British rule. Though agriculture was the main source of livelihood for most people, yet, the country's economy was characterised by various kinds of manufacturing activities. India was particularly well known for its handicraft industries in the fields of cotton and silk textiles, metal and precious stone works etc.

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत निम्न-स्तरीय आर्थिक विकास

अंग्रेज़ी शासन की स्थापना से पूर्व भारत की अपनी स्वतंत्र अर्थव्यवस्था थी। यद्यपि जनसामान्य की आजीविका और सरकार की आय का मुख्य स्रोत कृषि था, फिर भी देश की अर्थव्यवस्था में विभिन्न प्रकार की विनिर्माण गतिविधियां हो रही थीं। सूती व रेशमी वस्त्रों, धातु आधारित तथा बहुमूल्य मणि-रत्न आदि से जुड़ी शिल्पकलाओं के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में भारत विश्व भर में सुविख्यात हो चुका था

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Textile Industry in Bengal

Muslin is a type of cotton textile which had its origin in Bengal, particularly, places in and around Dhaka (spelled during the pre-independence period as Dacca), now the capital city of Bangladesh. 'Daccai Muslin' had gained worldwide fame as an exquisite type of cotton textile. The finest variety of muslin was called malmal. Sometimes, foreign travellers also used to refer to it as malmal shahi or malmal khas implying that it was worn by, or fit for, the royalty.

बंगाल का सूती उद्योग

मलमल एक विशेष प्रकार का सूती कपड़ा है। इसका मूल निर्माण क्षेत्र बंगाल, विशेषकर ढाका के आस-पास का क्षेत्र रहा है (यह नगर अब बांग्लादेश की राजधानी है)। ढाका के मलमल ने उत्कृष्ट कोटि के सूती वस्त्र के रूप में विश्व भर में बहुत ख्याति अर्जित की थी। यह बहुत ही महीन कपड़ा होता था। विदेशी यात्री इसे शाही मलमल या मलमल ख़ास भी कहते थे। इसका आशय यही था कि वे इस कपडे को शाही परिवारों के उपयोग के योग्य मानते थे।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Such policies brought about a fundamental change in the structure of the Indian economy — transforming the country into supplier of raw materials and consumer of finished industrial products from Britain.

औपनिवेशिक शासकों द्वारा रची गई आर्थिक नीतियों का ध्येय भारत का आर्थिक विकास नहीं बल्कि अपने मूल देश के आर्थिक हितों का संरक्षण और संवर्धन ही था। इन नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था के स्वरूप के मूल रूप को बदल डाला। भारत, इंग्लैंड को कच्चे माल की पूर्ति करने तथा वहां के बने तैयार माल का आयात करने वाला देश बन कर रह गया।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

the colonial government never made any sincere attempt to estimate India's national and per capita income

औपनिवेशिक शासकों ने कभी इस देश की राष्ट्रीय तथा प्रतिव्यक्ति आय का आकलन करने का भी ईमानदारी से कोई प्रयास नहीं किया।

the colonial government never made any sincere attempt to estimate India's national and per capita income.

Dadabhai Naoroji, William Digby, Findlay Shirras, V.K.R.V. Rao and R.C. Desai — it was Rao, whose estimates during the colonial period was considered very significant.

औपनिवेशिक शासकों ने कभी इस देश की राष्ट्रीय तथा प्रतिव्यक्ति आय का आकलन करने का भी ईमानदारी से कोई प्रयास नहीं किया।

इन आकलनकर्त्ताओं में दादा भाई नौरोजी, विलियम डिग्बी, फिंडले शिराज, डॉ. वी.के.आर.वी.राव तथा आर.सी. देसाई प्रमुख रहे हैं।

औपनिवेशिक काल के दौरान डॉ. राव द्वारा लगाए गए अनुमान बहुत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

AGRICULTURAL SECTOR

India's economy under the British colonial rule remained fundamentally agrarian — about 85 per cent of the country's population lived mostly in villages and derived livelihood directly or indirectly from agriculture

कृषि क्षेत्रक

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारत मूलत: एक कृषि अर्थव्यवस्था ही बना रहा। देश की लगभग 85 प्रतिशत जनसंख्या, जो गाँवों मे बसी थी, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि के माध्यम से ही अपनी रोजी-रोटी कमा रही थी

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Agriculture During Pre-British India

The French traveller, Bernier, described seventeenth century Bengal in the following way: "The knowledge I have acquired of Bengal in two visits inclines me to believe that it is richer than Egypt. It exports, in abundance, cottons and silks, rice, sugar and butter. It produces amply — for its own consumption — wheat, vegetables, grains, fowls, ducks and geese. It has immense herds of pigs and flocks of sheep and goats. Fish of every kind it has in

पूर्व ब्रिटिश काल में कृषि

सत्रहवीं शताब्दी में भारत आए फ्रांसीसी यात्री बर्नीयर ने तत्कालीन बंगाल का इस प्रकार वर्णन किया है– "अपने दो बार के भ्रमण के दौरान बंगाल के विषय में संगृहीत जानकारी के आधार पर मैं कह सकता हू ं कि यह क्षेत्र मिश्र देश से कहीं अधिक समृद्ध है। यहां से सूती–रेशमी वस्त्र, चावल, शक्कर और मक्खन का प्रचुर मात्रा में निर्यात होता है। यहां अपने आंतरिक उपभोग के लिए भी गेहूँ, सब्जियां, अनाज, मुर्गे/मुर्गियां, बत्तख आदि का भरपूर उत्पादन होता है। यहां सूअरों के बड़े–बड़े झ़ंड तथा भेड–बकरियों के विशाल झ़ंड भी विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में हर प्रकार की मछलियां प्रचुरता में उपलब्ध हैं।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Agricultural pro-ductivity became low though, in absolute terms, the sector experienced some growth due to the expansion of the aggregate area under cultivation.

various systems of land settlement that were introduced by the colonial government.

Particularly, under the zamindari system which was implemented in the then Bengal Presidency comprising parts of India's present-day eastern states, the profit accruing out of the agriculture sector went to the zamindars instead of the cultivators.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The main interest of the zamindars was only to collect rent regardless of the economic condition of the cultivators; this caused immense misery and social tension among the latter.

जमींदारों की रुचि तो किसानों की आर्थिक दुर्दशा की अनदेखी कर, उनसे अधिक से अधिक लगान संग्रह करने तक सीमित रहती थी। इसी कारण, कृषक वर्ग को नितांत दुर्दशा और सामाजिक तनावों को झलने को बाध्य होना पड़ा।

revenue settlement were also responsible for the zamindars adopting such an attitude; dates for depositing specified sums of revenue were fixed, failing which the zamindars were to lose their rights.

राजस्व व्यवस्था की शर्तों का भी जमींदारों के इस व्यवहार के विकास में बहुत योगदान रहा है। राजस्व की निश्चित राशि सरकार के कोष में जमा कराने की तिथियां पूर्व निर्धारित थीं – उनके अनुसार रकम जमा नहीं करा पाने वाले जमींदारों से उनके अधिकार छीन लिए जाते थे।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

There was, of course, some evidence of a relatively higher yield of cash crops in certain areas of the country due to commercialisation of agriculture.

But this could hardly help farmers in improving their economic condition as, instead of producing food crops, now they were producing cash crops which were to be ultimately used by British industries back home.

small farmers and sharecroppers neither had resources and technology nor had incentive to invest in agriculure.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

INDUSTRIAL SECTOR

India could not develop a sound industrial base under the colonial rule. Even as the country's world famous handicraft industries declined, no corresponding modern industrial base was allowed to come up to take pride of place so long enjoyed by the former.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

In the unfolding economic scenario, the decline of the indigenous handicraft industries created not only massive unemployment in India but also a new demand in the Indian consumer market, which was now deprived of the supply of locally made goods.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

During the second half of the nineteenth century, modern industry began to take root in India but its progress remained very slow. Initially, this development was confined to the setting up of cotton and jute textile mills. The cotton textile mills, mainly dominated by Indians, were located in the western parts of the country, namely, Maharashtra and Gujarat, while the jute mills dominated by the foreigners were mainly concentrated in

the iron and steel industries began coming up in the beginning of the twentieth century. The Tata Iron and Steel Company (TISCO) was incorporated in 1907. A few other industries in the fields of sugar, cement, paper etc. came up after the Second World War.

there was hardly any capital goods industry to help promote further industrialisation in India. Capital goods industry means industries which can produce machine tools which are, in turn, used for producing articles for current consumption.

the growth rate of the new industrial sector and its contribution to the Gross Domestic Product (GDP) or Gross Value Added remained very small.

This sector remained confined only to the railways, power generation, communications, ports and some other departmental undertakings.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

FOREIGN TRADE

India has been an important trading nation since ancient times.

exporter of primary products such as raw silk, cotton, wool, sugar, indigo, jute etc. and an importer of finished consumer goods like cotton, silk and woollen clothes and capital goods like light machinery produced in the factories of Britain.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

FOREIGN TRADE

India has been an important trading nation since ancient times.

exporter of primary products such as raw silk, cotton, wool, sugar, indigo, jute etc. and an importer of finished consumer goods like cotton, silk and woollen clothes and capital goods like light machinery produced in the factories of Britain.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

As a result, more than half of India's foreign trade was restricted to Britain while the rest was allowed with a few other countries like China, Ceylon (Sri Lanka) and Persia (Iran). The opening of the Suez Canal further intensified British control over India's foreign trade

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The most important characteristic of India's foreign trade throughout the colonial period was the generation of a large export surplus.

Several essential commodities—food grains, clothes, kerosene etc. — were scarcely available in the domestic market. Furthermore, this export surplus did not result in any flow of gold or silver into India.

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

DEMOGRAPHIC CONDITION **Various details about the population of British India were first collected through a census in 1881.**

जनांकिकीय परिस्थिति

ब्रिटिश भारत की जनसंख्या के विस्तृत ब्यौरे सबसे पहले 1881 की जनगणना के तहत एकत्रित किए गए।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Before 1921, India was in the first stage of demographic transition. The second stage of transition began after 1921. However, neither the total population of India nor the rate of population growth at this stage was very high.

वर्ष 1921 के पूर्व का भारत जनांकिकीय संक्रमण के प्रथम सोपान में था। द्वितीय सोपान का आरंभ 1921 के बाद माना जाता है। किंतु, उस समय तक न तो भारत की जनसंख्या बहुत विशाल थी और न ही उसकी संवृद्धि दर बहुत अधिक थी।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The various social development indicators were also not quite encouraging. The overall literacy level was less than 16 per cent. Out of this, the female literacy level was at a negligible low of about seven per cent. Public health facilities were either unavailable to large chunks of population or, when available, were highly inadequate.

सामाजिक विकास के विभिन्न सूचक भी बहुत उत्साहवर्धक नहीं थे। कुल मिलाकर साक्षरता दर तो 16 प्रतिशत से भी कम ही थी। इसमें महिला साक्षरता दर नगण्य, केवल 7 प्रतिशत आँकी गई थी। जन-स्वास्थ्य सेवाएँ तो अधिकांश को सुलभ ही नहीं थीं। जहां ये सुविधाएँ उपलब्ध थीं भी, वहां नितांत ही अपर्याप्त थीं।

the overall mortality rate was very high and in that, particularly, the infant mortality rate was quite alarming—about 218 per thousand in contrast to the present infant mortality rate of 33 per thousand. Life expectancy was also very low—44 years in contrast to the present 69 years.

कोई आश्चर्य नहीं कि उस समय सकल मृत्यु दर बहुत ऊँची थी। विशेष रूप से शिशु मृत्यु दर अधिक चौंकाने वाली थी। आज भले ही हमारे देश में शिशु मृत्यु दर 33 प्रति हजार हो गई है, पर उस समय तो ये दर 218 प्रति हजार थी। जीवन प्रत्याशा स्तर भी आज के 69 वर्ष की तुलना में केवल 44 वर्ष ही था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

India during the colonial period which contributed to the worsening profile of India's population of the time.

इसमें कोई संदेह नहीं है कि औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत में अत्यधिक गरीबी व्याप्त थी, परिणामस्वरूप भारत की जनसंख्या की दशा और भी बदतर हो गई।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

OCCUPATIONAL STRUCTURE

the occupational structure of India, i.e., distribution of working persons across different industries and sectors, showed little sign of change. The agricultural sector accounted forthe largest share of workforce, which usually remained at a high of 70-75 per cent while the manufacturing and the services sectors accounted for only 10 and 15-20 per cent respectively.

व्यावसायिक संरचना

औपनिवेशिक काल में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रकों में लगे कार्यशील श्रमिकों के आनुपातिक विभाजन में कोई परिवर्तन नहीं आया। कृषि सबसे बड़ा व्यवसाय था, जिसमें 70–75 प्रतिशत जनसंख्या लगी थी। विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्रकों में क्रमशः 10 प्रतिशत तथा 15–20 प्रतिशत जन–समुदाय को रोजगार मिल पा रहा था।

states of Tamil Nadu, Andhra Pradesh, Kerala and Karnataka), Bombay and Bengal witnessed a decline in the dependence of the workforce on the agricultural sector with a commensurate increase in the manufacturing and the services sectors. However, there had been an increase in the share of workforce in agriculture during the same time in states such as Orissa, Rajasthan and Punjab.

उस समय की मद्रास प्रेसीडेंसी (आज के तमिलनाडु, आंध्र, कर्नाटक और केरल प्रांतों के क्षेत्रों), मुंबई और बंगाल के कुछ क्षेत्रों में कार्यबल की कृषि क्षेत्रक पर निर्भरता में कमी आ रही थी, विनिर्माण तथा सेवा क्षेत्रकों का महत्त्व तदनुरूप बढ रहा था। किंतु उसी अवधि में पंजाब, राजस्थान और उड़ीसा के क्षेत्रों में कृषि में लगे श्रमिकों के अनुपात में वृद्धि आँकी गई।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

INFRASTRUCTURE

Under the colonial regime, basic infrastructure such as railways, ports, water transport, posts and telegraphs did develop.

आधारिक संरचना

औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत देश में रेलों, पत्तनों, जल परिवहन व डाक-तार आदि का विकास हुआ।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Roads constructed in India prior to the advent of the British rule were not fit for modern transport.

ये कार्य तो औपनिवेशिक हित साधन के ध्येय से किए गए थे। अंग्रेज़ी शासन से पहले बनी सड़कें आधुनिक यातायात साधनों के लिए उपयुक्त नहीं थीं।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

There always remained an acute shortage of allweather roads to reach out to the rural areas during the rainy season. Naturally, therefore, people mostly living in these areas suffered grievously during natural calamities and famines.

ग्रामीण क्षेत्रों तक माल पहुँचाने में सक्षम सभी मौसम में उपयोग होने वाले सड़क मार्गों का अभाव निरंतर बना ही रहा। वर्षाकाल में तो यह अभाव और भी भीषण हो जाता था। स्वाभाविक ही था कि प्राकृतिक आपदाओं और अकाल आदि की स्थिति में ग्रामीण क्षेत्रों में बसे देशवासियों का जीवन कठिनाइयों के कारण दूभर हो जाता था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The British introduced the railways in India in 1850 and it is considered as one of their most important contributions. The railways affected the structure of the Indian economy in two important ways

अंग्रेज़ों ने 1850 में भारत में रेलों का आरंभ किया। यही उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। रेलों ने भारत की अर्थव्यवस्था की संरचना को दो महत्त्वपूर्ण तरीकों से प्रभावित किया।

it fostered commercialisation of Indian agriculture which adversely affected the self-sufficiency of the village economies in India.

इस व्यावसायीकरण का भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के आत्मनिर्भरता के स्वरूप पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

The volume of India's exports undoubtedly expanded but its benefits rarely accrued to the Indian people.

भारत के निर्यात में नि:संदेह विस्तार हुआ, परंतु इसके लाभ भारतवासियों को मुश्किल से ही प्राप्त हुए।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The inland waterways, at times, also proved uneconomical as in the case of the Coast Canal on the Orissa coast. Though the canal was built at a huge cost to the government exchequer,

उस समय के आंतरिक जलमार्ग अलाभकारी सिद्ध हुए। उड़ीसा की तटवर्ती नहर इसका विशेष उदाहरण है। यद्यपि इस नहर का निर्माण सरकारी कोष से किया गया था,

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

The introduction of the expensive system of electric telegraph in India, similarly, served the purpose of maintaining law and order.

भारत में विकसित की गई मँहगी तार व्यवस्था का मुख्य ध्येय तो कानून व्यवस्था को बनाए रखना ही था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

CONCLUSION

By the time India won its independence, the impact of the two-century long British colonial rule was already showing on all aspects of the Indian economy.

निष्कर्ष

स्वतंत्रता प्राप्ति तक, 200 वर्षों के विदेशी शासन का प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक आयाम पर अपनी पैठ बना चुका था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Britain. Infrastructure facilities, including the famed railway network, needed upgradation, expansion and public orientation. Prevalence of rampant poverty and unemployment required welfare orientation of public economic policy. In a nutshell, the social and economic challenges before the country were enormous.

विदेशी व्यापार तो केवल इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति को पोषित कर रहा था। प्रसिद्ध रेलवे नेटवर्क सहित सभी आधारिक संरचनाओं में उन्नयन, प्रसार तथा जनोन्मुखी विकास की आवश्यकता थी। व्यापक गरीबी और बेरोजगारी भी सार्वजनिक आर्थिक नीतियों को जनकल्याणोन्मुखी बनाने का आग्रह कर रही थीं। संक्षेप में, देश में सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां बहुत अधिक थीं।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

Recap

- **An understanding of the economy before independence is necessary to know and appreciate the level of development achieved during the postindependence period.**
- **Under the colonial dispensation, the economic policies of the government were concerned more with the protection and promotion of British economic interests than with the need to develop the economic condition of the colonised country and its**

पुनरावर्तन

- स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक विकास की उपलब्धियों को सही रूप में समझ पाने के लिए स्वतंत्रता पूर्व की अर्थव्यवस्था की सही जानकारी की आवश्यकता है।
- औपनिवेशिक शासकों की आर्थिक नीतियां शासित देश और वहां के लोगों के आर्थिक विकास से प्रेरित नहीं थीं, उनका ध्येय तो इंग्लैंड के आर्थिक हितों का संरक्षण और संवर्धन था।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

- **The agricultural sector continued to experience stagnation and deterioration despite the fact that the largest section of Indian population depended on it for sustenance.**
- **The rule of the British-India government led to the collapse of India's world famous handicraft industries without contributing, in any significant manner, to its replacement by a modern industrial base.**

- भले ही भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग कृषि से ही अपनी आजीविका पाता था, किंतु कृषि क्षेत्रक गतिहीन ही रहा – इसमें ह्रास के ही प्रमाण मिले हैं।
- भारत की अंग्रेज़ी सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों के कारण भारत के विश्व प्रसिद्ध हस्तकला उद्योगों का पतन होता रहा और उनके स्थान पर किसी आधुनिक औद्योगिक आधार की रचना नहीं हो पाई।

INDIAN ECONOMY ON THE EVE OF INDEPENDENCE
स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था

- **Lack of adequate public health facilities, occurrence of frequent natural calamities and famines pauperised the hapless Indian people and resulted in engendering high mortality rates.**
- **Some efforts were made by the colonial regime to improve infrastructure facilities but these efforts were spiced with selfish motives. However, the independent Indian government had to built on this base through planning.**

- पर्याप्त सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, बार-बार प्राकृतिक आपदाओं और अकाल ने जनसामान्य को बहुत ही निर्धन बना डाला और इसके कारण उच्च मृत्युदर का सामना करना पड़ा।
- यद्यपि अपने औपनिवेशिक हितों से प्रेरित होकर विदेशी शासकों ने आधारिक सरंचना सुविधाओं को सुधारने के प्रयास किए थे, परंतु इन प्रयासों में उनका निहित स्वार्थ था। यद्यपि स्वतंत्र भारत की सरकार ने योजनाओं के द्वारा यह आधार बनाया।